लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या: 3; जुलाई-दिसंबर, 2021

आओ पानी बचाओ

✍ डी॰ आर॰ समर्पिता
✍ डी॰ आर॰ समादृता

तुम्हारे बिन पानी
याद आती है नानी
सूख जाएगा जगत सारा
अगर छोड़ दिया तुमने साथ हमारा।

पानी तुम हमारी माता हो
सारे जहान में काम आते हो
पानी पीना, कपड़े धोना
तुम्हारे बिन आता है रोना

पानी जीवों के प्राण है
जीवन पानी का दान है

तुम न हो तो जीवन बेकार
तुमसे ही तो सपने साकार।

सुख जाती हैं नदियां-नद सारे
हे पानी बिन तुम्हारे
तुम्हारी गरिमा का अंत नहीं
पर तुम्हारी हो गयी बहुत कमी।

बूंद बूंद पानी बचाओ
नहीं तो ढूंढते रह जाओ।
एक दूसरे से हाथ मिलाओ
आओ सब पानी बचाओ।

संपर्क-सूत्र:
छठीं कक्षा
महर्षि विद्या मंदिर